**International Journal of Applied and Universal Research** **E- ISSN No: 2395-0269**
**Volume VI, Issue I, February 2019 Available online at: www.ijaur.com**

# "कोल एवं गोंड जनजातियों के धार्मिक जीवन का अध्ययन"

**अबनीश कुमार पटेल**
**शोधार्थी, समाज शास्त्र विभाग**
**शासकीय ठाकुर रमणत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म0प्र0)**

***सारांश***– कोल एवं गोड़ जनजातियों के विभिन्न धार्मिक विश्वास हिन्दुओं की ही भांति प्रचलित है। हिन्दू वर्ण के निम्न जातियों के धर्म एवं आदिवासी धर्म में समानता पाई जाती है। वर्तमान समय में जबकि कोल–गोड़ जनजाति के लोग गांव में भी हिन्दुओं एवं अन्य जाति के लोगों के साथ रहने लगे हैं।

**मुख्य शब्द** – धार्मिक विश्वास, पालन–पोषण, कोल एवं गोंड जनजाति।

**प्रस्तावना** – धर्म का कोई न कोई स्वरूप प्रत्येक जनजाति समाज में मिलता है, सभी सरल समाजों में लोगों का विश्वास है कि प्राकृतिक क्रियाओं और मानव प्रयत्नों की सफलता ऐसी सत्ता के नियंत्रण में है जो दैनिक अनुभूति से परे है और जिसके हस्तक्षेप से घटनाक्रम बदल सकता है। भारत में विद्यमान परामानवीय एवं परलौकिक शक्तियों से संबंधित धार्मिक एवं लोक विश्वास के विभिन्न स्वरूप जनजातियों में दिखाई पड़ता है। जीवात्मावाद, जातिवाद, आत्मावस्तु तथा बहुदेवतावाद आदि धार्मिक विश्वास के महत्वपूर्ण तत्व प्रायः प्रत्येक जनजातिय समाज में दृष्टिगोचर होता है। भारत में 1931 के पहले धर्म एवं जादू के प्रति गलत धारणाएँ बनती एवं बिगड़ती रहीं, परन्तु बाद में जनजाति लोग धर्म के आत्मवाद के अंतर्गत रहकर जनजाति लोग धर्म की संज्ञा दी गयी तथा हिन्दुओं के निकट माना जाने लगा। अंग्रेजी शासन ने जनजाति समाज को हिन्दुओं से भिन्न सामाजिक इकाई मानकर उनके धर्म को हिन्दुओं के धर्म से पृथक कर दिया गया। बाद में हिन्दू धर्म एवं जनजाति धर्म को अलग–अलग मानते हुए भी इनके विभिन्न स्तरों पर सम्मिलित होने के कारण इन दोनों में सीमा रेखा खींचना उचित हो गया। हिन्दू वर्ण की निम्न जातियों एवं जनजातियों के धर्म में समानता पाई जाती है। फिर दोनों धर्म में अंतर स्पष्ट करने में व्यवहारिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सामान्य मूल्यों एवं समान्यकों को परिपक्व बनाने प्रतिपादित करने और उन्हें पुष्ट करने तथा रहने के क्षेत्र या प्रायः महत्वपूर्ण कार्य करता है। सामाजिक संगठन एवं सामाजिक नियंत्रण के लिए धर्म की प्रकार्यात्मक भूमिका होती है। इसके माध्यम से स्थापित प्रतिमानों से विपक्षगामी व्यवहारों पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। जनजाति समाजों में धर्म एवं समाज एक दूसरे से मिले होते हैं। अतः इस समाज में धर्म का अध्ययन सामाजिक जीवन के परिपेक्ष्य में किया जा सकता है। हटन के अनुसार– ''आत्मवाद, बागावाद, टोटनवाद, नरबलि,त्र नरमुंडों के शिकार की परम्परा, पूर्व प्रथा परलौकिक जीवन तथा पूर्व जन्म में विश्वास आदिवासी धर्म के मुख्य तत्व हैं।''

जीवन में विश्वास जनजातियों की मुख्य विशेषता रही है, इसीलिए काफी लम्बे समय तक जनजाति धर्म को जीववाद की श्रेणी में रखा गया है। इस विश्वास के अंतर्गत दो आत्माओं की कल्पना की जाती है एक तो स्वच्छंद आत्मा जो अनेक स्थानों पर भ्रमण कर सकती है तथा इसकी शरीरस्थ आत्मा जो शरीर में वास करती है, जनजातियों के स्वप्नों में जीवन के स्वतंत्र एवं पृथक अनुभव होते हैं। जनजातियों में विभिन्न दैविक आपदाओं को बुरी आत्मा से संचालित माना जाता है। इसी प्रकार जनजाति के लोग इस विश्वास के साथ पत्थर लेकर चलते हैं कि इसमें आत्मा का वास है। जीववाद संबंधित धार्मिक विश्वास के अतिरिक्त कई अन्य विशेषतायें भी आदिवासी धर्म में पायी जाती है। बोगाइज्म की धारणा जनजाति से विकसित मानी जाती है, इसके अनुयायी अलौकिक सत्ता में विश्वास करते हैं। मजूमदार विद्यार्थी एवं राय के अध्ययनों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि वस्तुतः भारतीय जनजाति एक ईश्वर पर विश्वास न करके अनेक देवी–देवताओं पर विश्वास करती हैं। इसलिए इनमें अनेक देवी–देवताओं की आराधना की जाती है। यद्यपि देवी–देवताओं में ऊँच–नीच का सोपान क्रम विभिन्न जनजातियों में अलग–अलग रूप से है। तथापि आदिवासी धन को बहुदेवतावादी धर्म की संज्ञा दी जाती है। राय एल्विन आदि के अध्ययन भी इसकी पुष्टि करते हैं। मैलोनोवस्की ने धर्म के सामाजशास्त्री एवं मनोवैज्ञानिक दोनों पक्षों को महत्वपूर्ण माना है। जनजातीय समाजों में धर्म की अपेक्षा जादू–टोने संबंधी विश्वास अधिक प्राचीन हैं। प्राचीन भातरीय समाजों में प्रारंभ से सामान्यतः व्यक्ति इच्छित अथवा मनोवांछित फल की प्राप्ति हेतु जादू–टोने का सहारा लेता रहा होगा जेसे पशुओं की बीमारी, फसल, धनसंपदा, नजर, प्राकृतिक आपदाओं एवं अन्य समस्याओं के समाधान हेतु जब उसके अहम द्वारा चलित ये निरंतर असफल रही होगी तो मनुष्य ने प्रार्थना अथवा धर्म का सहारा जरूर लिया होगा। इस प्रकार जेम्स फ्रेजर के अनुसार प्रारंभ में जादू का प्रचलन अधिक रहा होगा परन्तु जब जादू की सहायता से इच्छित उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हुई तो लोगों ने धर्म का आश्रय लिया होगा।

जनजातियों में अत्यधिक रूढ़िवादी होते हैं, इसलिए उनकी संस्कृति आज भी नैतिक बनी हुई है। जंगलों, पहाड़ों, खोह, कंदराओं और नदियों की घाटी में व्यतीत किये जाने वाला उनका जीवन सादा जीवन उच्च विचार का द्योतक रहा है। उनका खान–पान, रहन–सहन, रूप–रंग, आचार–विचार, व्यवहार का ढंग सामान्य नहीं विशिष्ट है। जंगल में रहने वाले आदिवासी आज भी नग्न और अर्द्धनग्न रहते हैं। उनके बाल बड़े होते हैं, तथा वे परंपरागत हथियार जैसे भाला, डंडा, तीर–धनुष कटार आदि से अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं। उनकी वेश–भूषा तथा आभूषण विशेष प्रकार के होते हैं। स्वभावतः वह कठोर, सत्यभासी और स्वाभिमानी होते हैं।

जनजातीय परिवारों का अपना एक अलग संगठन होता है और इस संगठन की स्थिरता के लिए बनाये गये अनुशासनात्मक नियम परंपरागत रूप से इनके स्वभाव का एक अंग बन जाता है और लोग इन परंपराओं के प्रति आस्थावान होते हैं। भूत, प्रेत, टोना, टोटका में अटूट विश्वास रखते हैं। आदिवासियों की संस्कृति अपने में अनूठी संस्कृति है।

**विश्लेषण** – धर्म संस्कृति का प्रमुख अंग हैं, लोक जीवन धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत रहता है। जनजाति संस्कृति की नीव ही धर्म पर टिकी होती है। वस्तुतः जनजातीय समाज प्रारंभ से ही धर्म सापेक्ष रहा है। धर्म सापेक्ष समाज एवं व्यक्ति आदि दैवी शक्ति को अलौकिक मानकर उसकी अराधना करता है तथा अपने इष्टदेव को प्रसन्न तथा संतुष्ट करके मनोवांछित फल भी प्राप्त करता है। व्यक्ति के धार्मिक विश्वास लोगों के धार्मिक विश्वास के भावात्मक अर्थ के महत्वपूर्ण सूचक होते हैं और वे प्रायः हमें ये समझाने में सहायता करते हैं कि किस प्रकार धर्म सारे व्यवहार को प्रभावित करता है। धार्मिक विश्वासों में कुछ विशेष देवी–देवताओं, वृक्ष अथवा पशुओं की पूजा की परंपरा रही है।

प्रस्तुत अध्ययन में कोल एवं गोड़ परिवारों के धार्मिक विश्वास, कर्मकांड सांस्कृतिक क्रियाकलापों आदि से संबंधित विवरणों को प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान समय में गांवों में समूह बनाकर रहने वाले कोल–गोड़ जनजातीय समाज के लोग दिन–प्रतिदिन निरंतर सभ्य समाजों के संपर्क में आते जा रहे हैं। शिक्षा एवं संचार माध्यमों के प्रसार के कारण आज उनके मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक स्थित एवं मनोवृत्तियों में परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं जो तालिक के माध्यम से धार्मिक आस्था संबंधित विवरण को दर्शाया गया है।

**सारणी कोल एवं गोड़ जनजाति के धार्मिक आस्थाओं का विवरण**

| धर्म का नाम | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| हिन्दू | 291 | 97.00 |
| मुस्लिम | 00 | 00 |
| ईसाई | 09 | 03.00 |
| अन्य | 00 | 00 |
| योग | 300 | 100.00 |

स्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण

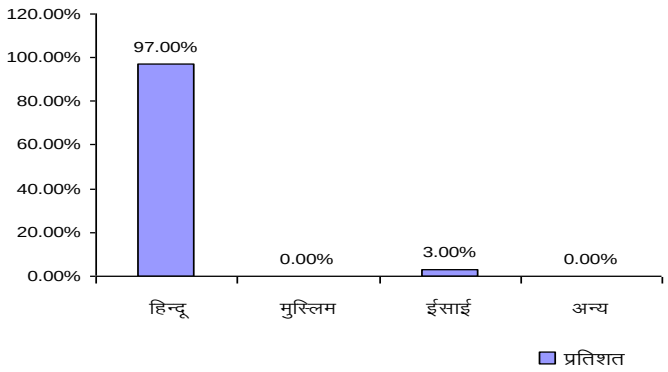


**सारणी धार्मिक कार्यों को सम्पन्न कराने संबंधी मत**

| क्रमांक | प्रकार | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | धार्मिक पुस्तक पढ़कर | 60 | 20.00 |
| 2 | तीर्थ स्थलों पर जाकर | 70 | 23.33 |
| 3 | घर में दिया जलाकर | 170 | 56.67 |
| | योग | 300 | 100.00 |

स्रोत – व्यक्तिगत सर्वेक्षण

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 20 प्रतिशत धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करते हैं, 23.33 प्रतिशत तीर्थ स्थलों पर जाना पसंद करते हैं तथा 56.67 प्रतिशत परिवार घर पर ही दिया–बाती जलाकर धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं।

**निष्कर्ष** – जनजातियों के धार्मिक कृत्यों में पूजा, चढ़ौत्री, बलि एवं विभिन्न जादुई कार्यो का महत्वपूर्ण स्थान है। गुनिया लोग अपने गुरु को बहुत महत्व देते हैं तथा उनकी कृपा से वे अपने को सारे संकटों से मुक्त हुआ मानते हैं। अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं रूढ़िगत परम्पराओं के निर्वहन के साथ–साथ इनके द्वारा झाड़–फूक, चौरा, ओझाई, टोना–टोटका तथा जंत्र–मंत्र एवं चिकित्सा हेतु अनेक जड़ी–बूटियों का प्रयोग किया जाता है।

जनजातियों का जीवन अनेक अंध–विश्वासों से भरा पड़ा है। जनजाति के लोग सोते समय अपना पैर पश्चिम या दक्षिण की ओर करते हैं। शेष दिशाओं में पैर करता अशुभ माना जाता है। बीज शुक्रवार या सोमवार को बोना शुभ माना जाता है। सरई का वृक्ष जब अच्छी तरह से फलता है तब कोदों की फसल अच्छी पैदा होती है। आकाश में बिजली का अधिक चमकना महुआ की फसल के लिए हानिकारक होती है। इस प्रकार अनेक मान्यताएँ तथा अंध–विश्वास जनजातियों के जीवन से जुड़े हैं।

**संदर्भ** –

1. कुरुक्षेत्र – ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली का प्रकाशन।
2. योजना – योजना भवन सांसद मार्ग, नई दिल्ली का प्रकाशन।

3. आगे आएँ लाभ उठाएँ – सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, मध्यप्रदेश शासन का प्रकशन 2008।
4. उद्यमिता – उद्यमिता विकास मध्यप्रदेश शासन का प्रकाशन।
5. डॉ0 अरुण गंगेल – उद्यमिता विकास मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2008।
6. गौर पी0पी0 एवं मराठा – पंचायत राज ग्रामीण विकास, आदित्य पब्लिशर्स, बीना, 2006।
7. डॉ0 व्ही0के0 जैन – आर्थिक विकास के सिद्धान्त, कालेज बुक डिपो, जयपुर नवीन संस्करण 2010।
8. जीद एवं रिस्ट चार्ल्स – आर्थिक विचारों का इतिहास, राधा पब्लिकेशन दरियागंज, नई दिल्ली, 2005।
9. डॉ0 कटारिया, सुरेन्द्र – ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज, आर0वी0एस0ए0 पब्लिशर्स एस0एम0एस0 हाइवे, जयपुर 2008।
10. डॉ0 पन्त, डी0सी0 – भारत में ग्रामीण विकास, कालेज बुक डिपो, जयपुर नवीन संस्करण 2010।